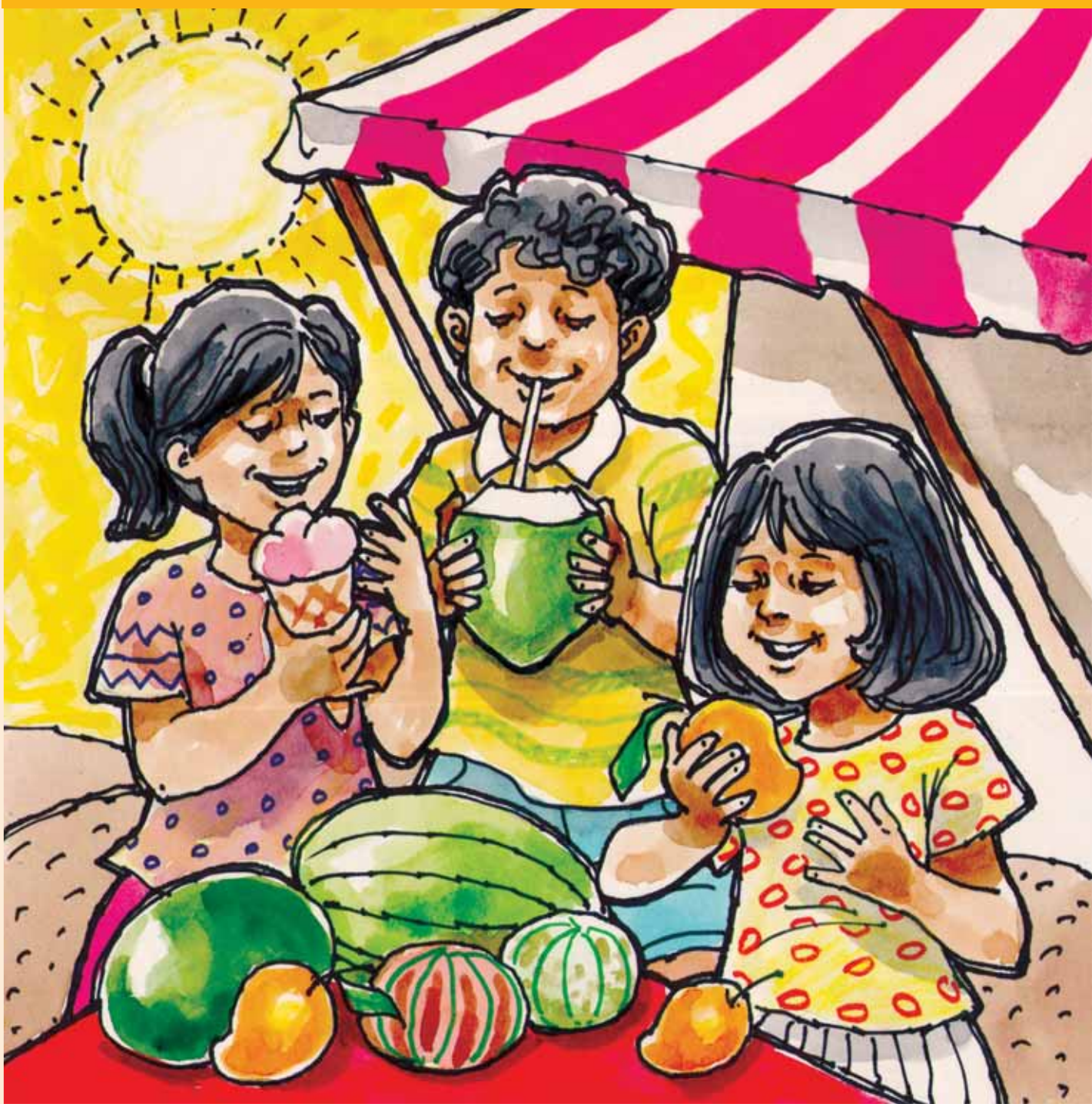


Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 6, June 2014





Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 6, June 2014

वर्ष 19, अंक 6, जून 2014

Editor / संपादक

Manas Ranjan Mahapatra

मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण

Deepak Kumar Gupta

दीपक कुमार गुप्ता

Surekha Sachdeva

सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी

Narender Kumar

नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार

Neeta Gangopadhyay

नीता गंगोपाध्याय

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt. Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, N.D.

Contents/सूची

<i>Focus on Indian Content for Children.....</i>	1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी 3
Guno and Koyo	Kala Thairani 6
Rain	Vikalp 8
पेड़	प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे 9
चश्मे वाले मास्टर जी	प्रकाश मनु 10
The Nightmare	Mugdha Pandey 15
मिसरी रानी और मिट्टू...	सुधीर मेहरा 19
नटखट की खटपट	मीना गुप्ता 21
Puzzles for You	Srutikirti Nayak 22
हृदय परिवर्तन	डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक' 24
The Miracle of A Coin	Sarla Bhatia 27
हरा पेड़	डॉ. शशि गोयल 29
पर्यावरण	सुमित्रा सिंकु 31
मजेदार खेल	आइवर यूशिगुल 32

Editorial Address/ संपादकीय पता

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निशुल्क वितरित किया जाता है।

Focus on Indian Children's Content in AFCC 2014

India was the Country of Focus at the Asian Festival of Children's Content (AFCC) held at National Library Building, Singapore from 30 May to 4 June 2014. Mr Lawrence Wong, Minister for Culture, Community and Youth and 2nd Minister, Ministry of Communications and Information inaugurated the Festival. Mrs Vijay Thakur Singh, High Commissioner of India in Singapore was the special guest on the occasion. The function was also attended by Ms Claire Chiang, Chairperson, AFCC, Mr R Ramachandran, Executive Director, AFCC and Dr M A Sikandar, Director, NBT among others. Earlier, the Focus Country Pavilion was inaugurated by the Indian High Commissioner in the presence of the dignitaries.

AFCC 2014 provided a vibrant forum to Indian authors, illustrators and publishers to showcase India's diverse and rich children's content and tradition of storytelling in different Indian languages since ancient times. The Indian presentation included a special exhibit of over 200 recently published children's books in English, Hindi, Gujarati and Tamil, a set of specially curated panels displaying a visual journey of children's literature in India and illustrative elements including cut-outs of amazing legendary characters like *Vyasa and Ganesh*, *Tenali Rama*, *Birbal*, *Swami* etc. from Indian mythology and storytelling tradition. The pavilion was designed by Mr Debabrata Sarkar, Deputy Director (Art), NBT.





The panel discussions that were organised at the Festival on various themes included *A Brush with Creativity: My Colourful Story*, *What Girls are Doing in Our Stories: Gender Issues in Indian Children's Literature*, *Past, Present Future: Reinventing Children's Literature*, *The Child in Me: My Writings*, *India in Pictures: Comics and Graphic Novels* and *Jungle Chat: Animals and Birds in Indian Children's Literature*. The speakers and moderators in these events included eminent authors, editors, publishers and illustrators, like Mr Arup Kumar Dutta, Ms Deepa Agarwal, Justice Leila Seth, Ms Manjula Padmanabhan, Dr Divik Ramesh, Ms Usha Venkataraman, Mr Subir Shukla, Mr Atanu Roy, Ms Sampurna Chattarji, Ms Nina Sabnani, Dr M A Sikandar, Ms Gitanjali Chatterjee, Mr Manas Ranjan

Mahapatra, Mr Deep Saikia, Ms Atiya Zaidi, Ms Navin Menon and Mr S K Khurana from the Indian publishing industry.

The event Meet the Indian Literary Stars followed by the India Night on 1 June 2014 created a pleasant forum of interaction between authors and illustrators from India and other parts of the world. Mr S R Nathan, former President of Singapore, Mrs Vijay Thakur Singh, High Commissioner of India at Singapore and Ms Sim Ann, Minister of State, Ministry of Education and Ministry of Communications and Information were the honoured guests on the occasion. The Hindi and Tamil renderings of the AFCC title *Water* by Christopher Cheng and brought out by NBT were released on the occasion.

सात समुंदर नेशनल तैराक टी स्टॉल

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

तरणताल से निकलकर गायत्री अपने अप्पुन को खोज रही थी, पर अप्पुन किसी दवा की तलाश में निकले थे। गायत्री अपने दूदा को खोजते-खोजते सड़क पर दूर निकल गई तो उसे ऑर्थर ने रोका और साथ कर लिया। तब तक अप्पुन भी पहुँच गए। सबने राहत की साँस ली। अब इस अंक में कुछ और बातें ...

“सो रही है?” अनंती झुँझला उठी।

“क्यों डाँट रही हो मेरी गायत्री को?”
नारायणन ने कमरे में झाँककर पूछा।

“अब देखिए न बाबू जी, अर्द्धवार्षिक परीक्षा के पहले प्रोजेक्ट कॉपी जमा करनी है। विज्ञान की बात तो छोड़िए, अब तो मलयालम और अँग्रेजी में भी प्रोजेक्ट वर्क जमा करना होता है। ये है कि पड़े-पड़े सो रही है।”

“थक गई है बेचारी।”

“आप तो हमेशा इसी का पक्ष लेते हैं।”

नारायणन हँस दिए, “अब तो पढ़ाई भी किसी लड़ाई से कम नहीं बेटा। बस्ते का बोझ, होमवर्क, प्रोजेक्ट, हे भगवान!”
“उठती है कि नहीं रे!”

अनंती ने उसका बाल पकड़कर झकझोर दिया।

“आह! बहू, क्या कर रही हो?”

उधर गायत्री थके-हारे घोड़े की तरह बिस्तर पर उठ बैठी, माँ की ओर देखा, फिर धम्म से लेट गई।

“देखा! बाबू जी देखा आपने। कैसी बेहया लड़की है! आपको मालूम है कि इसे होमवर्क न करने के कारण सजा मिल चुकी है।”

“अच्छा बाबा, लाओ। मैं ही इसका काम कर



देता हूँ।” फिर नारायणन ही बैठकर बड़े-बड़े अक्षरों में गायत्री की कॉपी लिखने लगे।

सुबह तो गायत्री मारे डर के स्कूल ही नहीं जाना चाहती थी, परंतु जब अनंती ने कहा, “अरे, तेरे अप्पुपन ने देर रात तक बैठकर दोनों प्रोजेक्ट पूरे कर दिए हैं!” तो वह “सच!” कहते हुए तितली की तरह उड़कर नारायणन के गले से लिपट गई, “ओह दद्दा, तुम कितने अच्छे हो!”

“मतलबी कहीं की! काम कर दिया तो अच्छा।” नारायणन हँसने लगे।

परंतु इस तरह कितने दिन चल सकता है? गायत्री अंदर-ही-अंदर जैसे थक जा रही थी। साढ़े आठ-नौ तक घर पहुँची। फिर नहा-धोकर खाना खाकर स्कूल जाना। वहाँ भी कक्षा में नींद आने लगती है। सहेलियाँ चिढ़ातीं, “अजी देखती क्या हो? बड़ी तैराकी बनेगी यह...!”

एक दिन अँग्रेजी की अध्यापिका कवि रॉबर्ट लुई स्टीवेसन की कविता ‘रेनबो’ पढ़ाते-पढ़ाते अचानक पूछ बैठी, “गायत्री, इस कविता में इंद्रधनुष किस-किस चीज को जोड़ता है?”

गायत्री उस समय एक झपकी ले रही थी। उसने चौंककर तपाक से उत्तर दिया, “अलेप्पी से तिरुवनंतपुरम को...”

सारी कक्षा हँसी से लोट-पोट होने लगी।

अध्यापिका ने आकर गायत्री के बाल पकड़ लिए। “क्लास में सोने के लिए आती हो? बात

क्या है...?” कुछ लड़कियों को तो जैसे ऐसे ही मौके की तलाश रहती है।

चुगलखोर मल्ली ने झट से उठकर कहा, “वह रोज अलेप्पी जाती है, स्विमिंग सीखने। तैराकी में ओलंपिक जाएगी।”

“शटअप!” अध्यापिका ने गायत्री को झकझोरते हुए कहा, “आईदा फिर ऐसी हरकत की तो सीधे क्लास से बाहर कर दूँगी!”

गायत्री खड़ी थी। मारे शर्म के रोने लगी।

“अब बैठ भी जाओ!” अध्यापिका ने कसकर डाँटा।

मल्ली किताब के पीछे मुँह छिपाकर मुस्करा रही थी।

गायत्री ने मन-ही-मन उसे खूब कोसा। जरा टिफिन तो होने दो, फिर देखती हूँ। सारी क्लास की लड़कियाँ तिरछी नजर से दोनों ओर निहार रही थीं—हाँ जी देखना, आज कुमारी जरासंध के साथ कुमारी भीम का मल्लयुद्ध होगा। मल्ली भी बड़ी वो है। छिः!

अब उस दिन टिफिन में क्या हुआ यह बताना तो बेकार ही है। परंतु गायत्री का मन उचट गया। उसे लगा, यह सब बकवास है। क्या होगा तैराकी सीखकर? क्या होगा अगर उसने प्रतियोगिता जीत भी ली तो? क्या इस देश में उस जैसे तैराकों की कमी है? सब कौन-सा तीर मार लेते हैं? हाँकी तक में तो भारत गुमनाम हो गया। फुटबॉल के सहारा कप

में बाहर के 'सी' टीमों से भी हम हार गए। इसी एर्णाकुलम स्टेडियम में दर्शक ही नहीं थे। सियार भौंक रहे थे। भारोत्तोलन में मल्लेश्वरी, एथलेटिक्स में कुंजरानी जैसे एकाध अपवादों को छोड़कर लड़कियों की हस्ती ही क्या है?

अरे, मारे दुख के मिलखा सिंह ने अर्जुन पुरस्कार भी नहीं लिया। वह सफल हो भी गई तो उसे कौन पूछने वाला है?

उसने हू-ब-हू ऐसा ही सोचा होगा, ऐसी बात नहीं है। परंतु जैसे कुहरे के बीच से पहाड़, नगर, पेड़, घर-सब एक धुँधली तस्वीर-सी दीखते हैं, वैसे ही उसके मन में भी ऐसे ही अस्पष्ट शब्द उभर रहे थे।

इसीलिए तो जब मल्ली से उसकी कहासुनी हो रही थी, दोनों एक-दूसरे को जली-कटी सुना रही थी। “तू क्लास में कभी नहीं सोती है? बड़ी आई पढ़ने वाली!”

“और तू तैराकी में चैंपियन भी बन गई तो कौन-सा तीर मार लेगी?”

“तुझसे मतलब?”

“अरे जा जा! वही तो पटना का जाने कौन चाय की दुकान चला रहा है। चाय वाली बनने के लिए यह सब कर रही है क्या?”

तर्क में दम था। राष्ट्रीय तैराकी में तीन बार स्वर्ण पदक जीतने वाला गोपाल प्रसाद यादव पटना के काजीपुर में 'नेशनल तैराक टी स्टॉल' नाम से चाय की दुकान चलाकर अपने



परिवार का पेट पालता है। टी.वी. और अखबार के जरिए यह बात भी सभी को मालूम थी। फिर भी यह ताना किसे अच्छा लगता है?

गायत्री की दोस्त मीनाक्षी मुँह चिढ़ाने लगी, “चुगलखोर! चुगलखोर!”

मल्ली भी कहाँ पीछे हटने वाली थी! उसने भी तीर चलाया, “चायवाली! चायवाली!”

भला हुआ कि टिफिन खत्म होने की घंटी बजने लगी—“टन्-टन्-टन्!” वरना पता नहीं मल्लयुद्ध कहाँ तक पहुँचता।

फिर भी जाते-जाते वाटर बॉटल से मुँह में पानी भरकर सब एक-दूसरे पर जूठा पानी उड़ेलने लगीं।

“ले, चुगलखोर...!”

“तू भी लेते जा, इसी से चाय बनाना। पिच्चू...!”

दोनों तरफ से जूठे पानी की मिसाइल चलने लगी।

सी-26/35-40 ए, रामकटोरा
वाराणसी-221001 (उ. प्र.)

Guno and Koyo

Kala Thairani

Guno and Koyo are two names known to everyone in Indonesia. And whenever their names are mentioned people cannot suppress a smile, for Guno means "helpful" but he is really very unhelpful. Koyo means "wealth" but he rarely has any money. What is more, if Koyo ever acquires any wealth, his friend Guno, the helpful, helps him lose it.

It happened once that Guno and Koyo decided to rob an old Hadji (a Muslim holy man). In the darkness of the night they entered noiselessly into the Hadji's house and began to dig a hole in the wall. When the hole was big enough for one man to crawl through,

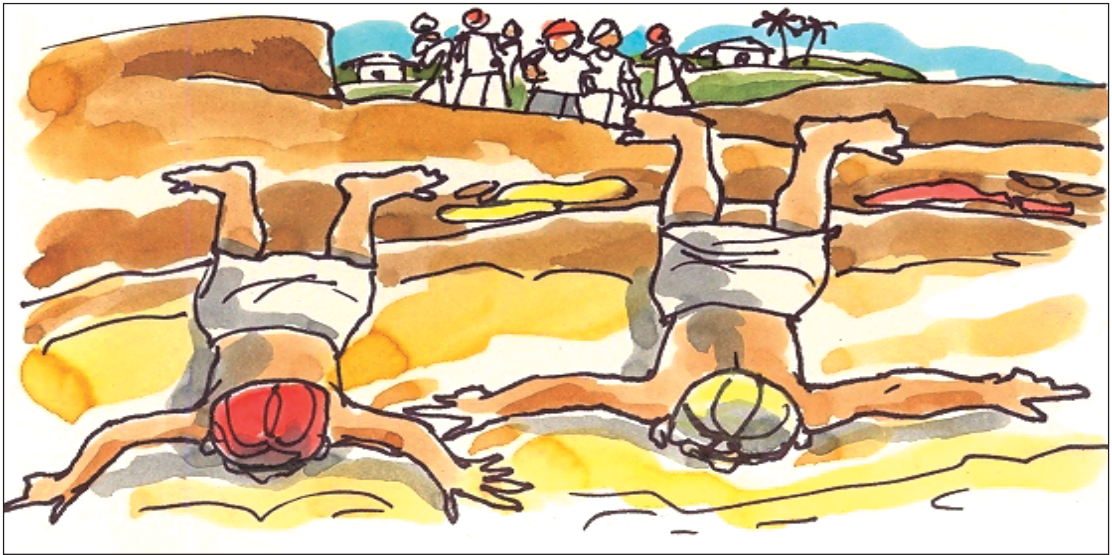
Guno went inside, lit a candle and by its dim light collected the Hadji's valuables and passed them through the opening to Koyo who piled them neatly on the ground. As Guno was about to leave, his eye fell on the Hadji's colourful robe hanging on a peg. He removed it and tried it on himself. "Oh, it is grand. I must not spoil it," he told himself, feeling the rich material with his hands. Seeing the Hadji sound asleep, he decided to leave by the front tentrance. So he tiptoed to the door unlocked it and went out.

Meanwhile Koyo was waiting anxiously for Guno's return. He sat guarding the opening they had dug and

wondered why his friend was taking so long inside. Just then, he saw a robed figure step out from the front door. He thought it was the Hadji.

"O-oh. The Hadji," he screamed in fright and fled, leaving behind their pile of loot.





The robed figure was none other than Guno himself. When he heard Koyo's frightened exclamation, he thought that the Hadji had awakened and was right behind him. So he threw down the robe and ran in swift pursuit after Koyo.

The two men made so much noise fleeing through the village that the neighbours woke up and rushed out with sticks and sickles to beat the culprits.

Guno and Koyo ran on in headlong flight, too afraid to stop and look back. They ran through the village and across the open fields until they came to the edge of the river.

"Quick. Jump in" said Guno. "We are finished," wailed Koyo. "If we jump in, we shall be drowned. If we don't the villagers will catch us and kill us."

"Don't be a coward" Guno said. "The river is not in flood. We won't be drowned."

"If it were in flood," Guno reasoned "the water would be muddy. But it is so clear, you can see the bottom of the river."

Koyo leaned forward to take a proper look. In the faint starlight he could see the rocky surface of the riverbed. "You may be right", he conceded. "But you go in first and tell me how it is."

So Guno pulled himself up, breathed deeply, closed his eyes and leaped from the ledge. He landed on an absolutely dry bed. The stones hurt his feet but he did not cry. Instead, he lay down and made swimming motions to convince his friend that there was nothing to fear.

Koyo shouted. "Why, don't you say something? Is it all right?"

"Can't you see me swimming?" Guno asked and said, "The water is very nice."

The villagers were now close to the river and Koyo could hear the clanging of their weapons. He took a deep breath, closed his eyes and jumped from the ledge.

Like Guno he landed on the dry riverbed and the stones hurt his feet and knees. "Oo-ho. Where is the water?" he asked Guno.

"Shut up, you fool. Try and swim like me; otherwise they will pursue us here," Guno replied. So Koyo also stretched himself on the ground and moved his legs and arms as though he was swimming.

The villagers had now reached the ledge. Looking down they gazed in wonder at the two frightened men trying to swim in the river that had been dry for months.

"Look, Look," they shouted to each other, amazed beyond belief. Then they laughed and put down their weapons. They could not bring themselves to punish such silly fugitives.

Since then, whenever a person tries to get out of a difficult situation by a foolish act, people tell him, "Don't go swimming in a dry riverbed."

(From NBT Publication *The Verdict and Other Tales from The East*)

Rain

Vikalp

When the ocean water
turn into vapours from the sun's heat
the vapours go up to the sky
and become clouds
the clouds have task
to fulfil the wish of land

When the clouds burst
it starts raining
the clouds complete their mission
given by the ocean
to give water to the thirsty land!

1686, Sector-4
Karnal-132001 (Haryana)

पेड़

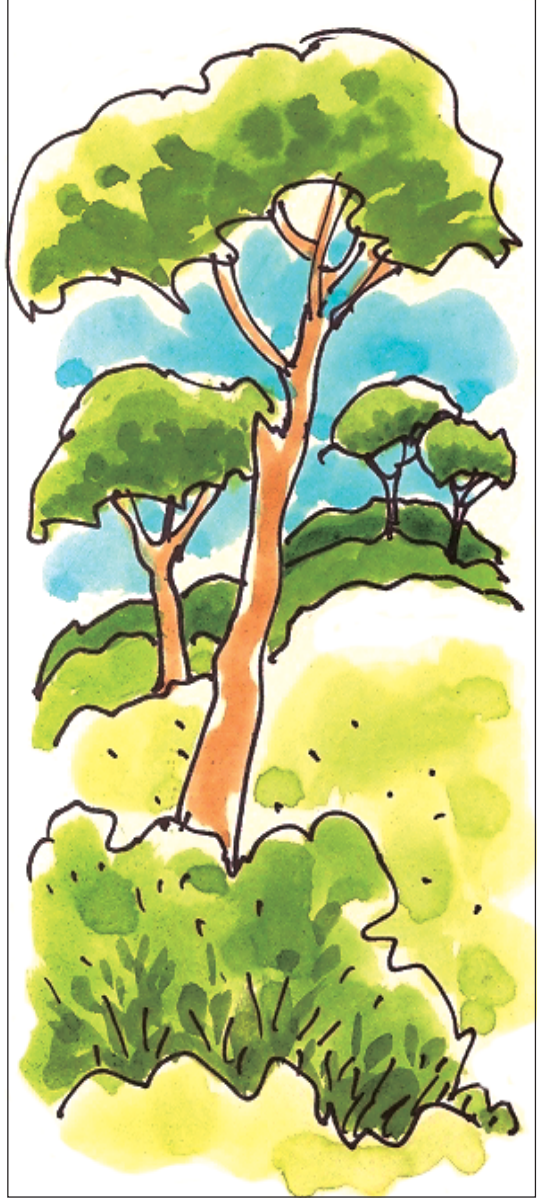
प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे

हरदम ही मुस्काते पेड़
गीत सुहाने गाते पेड़ ।
पेड़ों से जीवन है मिलता
पेड़ों पर जीवन है पलता
पेड़ नहीं तो हर मौसम को
सचमुच में हर अवसर खलता ।

शीतल जल को लाते पेड़
गीत सुहाने गाते पेड़
मीठे फल देते हैं पेड़
विषाक्त वायु लेते हैं पेड़
देते छाया, रचते माया
सुंदरता सृजते हैं पेड़ ।

वर्षा को ले आते पेड़
हर पल मधुर बनाते पेड़ ।

पेड़ों से त्योहार बने हैं
सभ्यताओं के वितान तने हैं
नीति बनी है, धर्म बना है
हर क्षण देखो मूल्य सने हैं
संस्कार सहलाते पेड़
हर जन को हैं भाते पेड़ ।



शासकीय महिला महाविद्यालय

मण्डला (म.प्र.) - 481661

चश्मे वाले मास्टर जी

प्रकाश मनु

कम्मो दीदी रोज सुबह-सुबह तैयार होकर, कंधे पर बस्ता टाँग स्कूल जाती, तो कुक्कू अचरज से आँखें फाड़े देखा करता था। कम्मो दीदी को हँसी आ जाती। कहती, “तू भी बिलकुल बुद्धू है कुक्कू! पता नहीं, मैं स्कूल जा रही हूँ, स्कूल? पढ़ने के लिए। इसमें इतना हैरान होने की क्या बात है?”

पर कितना ही दिमाग लगाए कुक्कू, उसकी समझ में ही नहीं आता था कि स्कूल क्या चीज है। वहाँ कैसे पढ़ते हैं।

एक दिन कम्मो दीदी ने खेल-खेल में ही पूछ लिया, “अच्छा कुक्कू, तू भी स्कूल जाएगा मेरे साथ?” और कुक्कू ने बगैर सोचे, खेल-खेल में ही जवाब दिया—हाँ-हाँ दीदी, जरूर!”



तब कुक्कू को स्कूल का कुछ पता नहीं था। बस, इतना पता था कि कम्मो दीदी ने जब से स्कूल जाना शुरू किया था, वह दिन भर सहेलियों के आगे अपने स्कूल के मजेदार किस्से सुनाती रहती है। और इधर तो उसका हर किस्सा स्कूल से शुरू होकर स्कूल पर ही खत्म होता था, जिसमें कभी मास्टर जी के हँसी-मजाक की बात चलती, तो कभी स्कूल में हर शनिवार को होने वाली अंत्याक्षरी की, जिसमें खूब कविताएँ सुनाई जाती थीं। कभी स्कूल के बाहर खटमिट्ठा चूरन बेचने वाले हँसमुख बजरंगी बाबा के बारे में वह बताती तो कभी अपनी सुंदर-सुंदर रंग-बिरंगी किताबें दिखाने लगती, जिनमें शेर, हाथी, भालू, हिरन, खरगोश और न जाने कौन-कौन-से जानवर बने होते थे।

कुक्कू कम्मो दीदी की बातें सुनता था बड़े अचरज से मुँह बाए और कभी-कभी खुशी के मारे “हैं!!!” कहकर जोर की ताजी बजा देता। सब हँसने लगते। कहते, “कम्मो, लगता है कुक्कू को तो तेरा स्कूल कुछ ज्यादा ही पसंद आ गया है। तू इसे अपने साथ क्यों नहीं ले जाती?”

सुनकर कम्मो के दिमाग में भी आइडिया आया, “हाँ सचमुच, कुक्कू भी चले तो कितना मजा आएगा। दोनों एक साथ जाया करेंगे काली तख्तियाँ चमकाकर...”

उसने कुक्कू से पूछा और कुक्कू उत्साह में आकर झटपट बोला, “चलूँगा, चलूँगा कम्मो दीदी!”

उसी दिन कम्मो दीदी ने बलराम भैया से पूछा तो वे बेफिक्री से बोले, “ठीक है, नाम लिखवा देंगे अगले हफ्ते।”

“पर यह तो कल से ही जाने के लिए बोल रहा है भैया!” कम्मो दीदी ने कुछ परेशान होकर बताया।

“तो ठीक है, ठीक है... तू कल ले जा। हेडमास्टर जी से कह देना कि हमारे भैया दो-चार रोज बाद आकर नाम लिखवा देंगे। बोल देना, मैं बलराम की बहन हूँ। वे कुछ नहीं कहेंगे।” बलराम भैया मुस्कराते हुए बोले।

“ठीक है।” कम्मो दीदी बोली।

उसे पता था, हेडमास्टर बाँकेबिहारी जी भैया को अच्छी तरह जानते हैं। कैसे न जानेंगे? कुछ साल स्कूल में पहले पढ़ते थे तो इतने होशियार थे कि हमेशा फर्स्ट आते थे।

अगले दिन कम्मो दीदी कुक्कू को हेडमास्टर जी के पास ले गई, तो वे हँसकर बोले, “अरे, यह तो बड़ा हँसमुख बच्चा है। क्या बिटर-बिटर देख रहा है मुझे! चिड़िया के बच्चे की तरह।” फिर बोले, “कम्मो, तुम खुद जाकर इसे कच्ची वाली क्लास में बैठा दो। वहाँ तिवारी मास्टर जी होंगे, बड़े-से चश्मे वाले। कहना, हेडमास्टर साहब ने भेजा है।” कम्मो खुश-खुश चल दी। उसने पहले तो कुक्कू को अपनी क्लास दिखा दी।

बोली, “देख कुक्कू, कोई परेशानी हो तो मुझे आकर बता देना।” फिर उसे साथ ले जाकर कच्ची वाली क्लास में बैठा आई, जहाँ तिवारी मास्टर जी हँस-हँसकर गोगी खरगोशनी की कहानी सुना रहे थे। कुक्कू डरा-झिझका हुआ-सा क्लास में सबसे पीछे पट्टी पर बैठा था। मजे में वह भी सिर हिला-हिलाकर कहानी सुनने लगा।

साथ ही तिवारी मास्टर जी के चेहरे को भी वह ध्यान से देख रहा था। लंबे, दुबले और प्यारे-से तिवारी मास्टर जी। आँख पर भारी-सा चश्मा। बड़ी-बड़ी मूँछें। कहानी सुनाते हुए बात-बेबात हँसते थे तो साथ ही उनकी मूँछें भी हँसती थीं, चश्मा भी हँसता था।

कहानी कुक्कू को पसंद आ रही थी। वहीं से बैठा-बैठा जोर-जोर से सिर हिलाता। बीच-बीच में पूरा मुँह खोलकर हँसता। पर उसे क्या पता था कि तिवारी मास्टर जी भी कहानी सुनाते-सुनाते चश्मे के शीशों के बीच से बड़े ध्यान से उसे देख रहे थे।

कहानी खत्म होने पर तिवारी मास्टर जी ने हाथ का इशारा करके कुक्कू को पास बुलाया। बोले, “वो जो नया लड़का पीछे बैठा है, सबसे पीछे... छुटकू-सा, मेरे पास आए।”

कुक्कू डरा, अरे, मुझसे क्या गलती हुई? वह धीरे से उठा और मास्टर जी के पास जाकर खड़ा हो गया। तिवारी मास्टर जी ने उसे देखकर कुछ अजीब-सा मुँह बनाया और फिर मूँछों में हँसते हुए पूछा, “ओहो, तुम तो अभी बहुत छोटे-से हो! क्या नाम है तुम्हारा?”

कुक्कू को इतना पता था कि घर में उसे सब कुक्कू बुलाते हैं। तो फिर यही तो उसका नाम हुआ! लिहाजा, उसने फट से जवाब दिया, “कुक्कू...!”

“क्या...?” मास्टर जी ने अजब-सा मुँह बनाकर कहा, “घुग्घू...?”

इस पर कुक्कू ने उनकी गलतफहमी को दूर करने के लिए और भी जोर से चिल्लाकर कहा, “घुग्घू नहीं मास्टर जी, कुक्कू, कुक्कू...!!”

“क्या कहा, घुग्घू...?” मास्टर जी ने फिर पूछा। हँसते-हँसते। इस बार उनकी मूँछें भी फुरफुरा रही थीं।

अब तो कुक्कू का धैर्य जवाब दे गया। वह दौड़ा-दौड़ा गया और अपनी कम्मो दीदी को बुला लाया जो कक्षा दो में पढ़ती थी। बोला, “कम्मो दीदी, ये मास्टर जी मेरा नाम पूछ रहे हैं। जरा बता दो।”

कम्मो दीदी कुक्कू से दो साल बड़ी थी। तो जानती थी कि घर में सब कुक्कू कहकर बुलाते हैं, पर असली नाम तो चंद्रप्रकाश है। उसने कहा, “मास्टर जी, इसका स्कूल वाला नाम है, चंद्रप्रकाश।”

इस पर तिवारी जी पहले की ही तरह अपने होंठों को खूब फैलाकर बोले, “चंटपरकास...!!” चश्मे से झाँकती उनकी आँखों में बड़ी शरारती हँसी थी।

कम्मो दीदी जितनी बार भी कहती, “नहीं मास्टर जी, चंट परकास नहीं, चंद्रप्रकाश...!”

उतनी ही बार मास्टर जी मुँह फैलाकर हँसते हुए कहते, “क्या कहा, चंट परकास? पर यह तो जरा भी चंट नहीं लगता!”

फिर आखिर में बोले, “अच्छा भाई अच्छा, समझ गया। कुक्कू...कुक्कू, कुक्कू माने चंद्रप्रकाश।”

इस पर कम्मो दीदी ही नहीं, क्लास के बच्चे भी हँसे, कुक्कू भी। कुक्कू को तिवारी मास्टर जी की बाँकी अदा भा गई। उस दिन घर जाकर उसने मम्मी-पापा और बलराम भैया को बताया, तो वे भी हँसे।

कुक्कू समझ गया कि तिवारी मास्टर जी उसे बहुत प्यार करते हैं। जो कुछ मास्टर जी पढ़ाते, वह झट से याद कर लेता। क बबूतर, ख खरगोश। गिनती भी। फिर वह सुनाता, तो मास्टर जी कहते, “शाबाश!” साथ ही वे प्यार से गिनती और क, ख, ग लिखना भी सिखाते। थोड़े ही दिनों में कुक्कू बीस तक गिनती भी सीख गया। दो का पहाड़ा भी।

कुक्कू को स्कूल अच्छा लगने लगा और सबसे अच्छे लगते चश्मे वाले मास्टर जी। वे हँसते हुए पढ़ाते थे। सब कुछ बड़ी जल्दी याद हो जाता था। फिर वे रोज एक कहानी सुनाते, कविता भी याद कराते।

कुछ समय बीता, अब कुक्कू तरक्की पाकर पहली क्लास में पहुँच गया था। पता चला, अब चश्मे वाले तिवारी मास्टर जी नहीं पढ़ाएँगे। भोलानाथ मास्टर जी पढ़ाएँगे। थोड़े गुस्से वाले

भोलानाथ मास्टर जी। कुक्कू को उनसे डर लगता था।

कभी-कभी तिवारी जी कुक्कू की क्लास में आकर पूछ लेते, “अरे कुक्कू, तुम्हारे क्या हाल हैं? खुश हो ना बच्चे। कोई मुश्किल तो नहीं?”

पर कुक्कू तो सचमुच मुसीबत में पड़ गया था। मगर समझ में नहीं आता था, किससे कहे? असल में ये जो दूसरे वाले भोलानाथ मास्टर जी आए थे, बिल्कुल हँसते ही नहीं थे। बच्चों से ज्यादा बात भी नहीं करते थे। तो फिर कुक्कू को भला पाठ कैसे समझ में आए? कैसे गिनती और पहाड़े याद हों? बल्कि जो याद था, वह भी भूल जाता।

भोलानाथ मास्टर जी गुस्से से घूरते। कहते, “अरे, कल तो दो का पहाड़ा सुनाया था तुमने, आज कैसे भूल गए? यह तो बुरी बात है। जल्दी सुनाओ, नहीं तो पिटाई होगी।”

सुनकर कुक्कू चुप। आँखों में आँसू आ जाते। उसे खुद पता नहीं था, वह कैसे भूलने लगा है।

एक बार भोलानाथ मास्टर जी को ज्यादा गुस्सा आ गया। बोले, “अच्छा, खड़े हो जाओ दीवार के साथ। मेरे साथ-साथ जोर से दो का पहाड़ा बोलो, तब याद होगा।”



कुक्कू जोर-जोर से दो-एकम-दो, दो-दूनी-चार बोल रहा था, तभी तिवारी मास्टर जी वहाँ से निकले। कुक्कू को खड़ा देखा तो चौंके। पास आकर बोले, “अरे, यह हमारा प्यारा खरगोश कुक्कू खड़ा क्यों है? कुक्कू क्यों परेशान है भाई?”

भोलानाथ मास्टर जी शिकायती चेहरा बनाकर बोले, “इसे तो कुछ याद ही नहीं होता। कितने दिन हो गए, दो का पहाड़ा ही याद नहीं हो पा रहा।”

तिवारी मास्टर जी एक पल के लिए हैरान हुए। फिर हँसकर बोले, “ओहो, आपने ठीक से याद नहीं कराया होगा। आप गुस्से में तो नहीं बोले थे? मैं तो हँसकर पढ़ाता था तो फटाफट सुना दिया करता था, क्लास में सबसे पहले!”

फिर कुक्कू से बोले, “अरे कुक्कू, जरा मेरे सामने सुनाओ तो सही। मैंने तुम्हें याद कराया था न!” तिवारी मास्टर जी की चश्मे के पीछे से झाँकती निगाहें। उनमें मीठी-सी हँसी थी।

साथ ही उनकी मूँछें फुरफुरा रही थीं, जैसे कह रही हों, “देखना, अभी सुनाएगा कुक्कू, अभी सुनाएगा।”

सामने चश्मे वाले तिवारी मास्टर जी को देखा तो कुक्कू का तो डर एकदम खत्म। जो कुछ भूला था, वह याद आ गया। उसने झटपट पूरा पहाड़ा सुना दिया।

देखकर तिवारी मास्टर जी बोले, “देखो ना, इसे तो याद है, पूरा याद है। आपने गुस्सा किया तो भूल गया।”

यही बात तो कुक्कू कहना चाहता था भोलानाथ मास्टर जी से, पर कह नहीं पा रहा था। पर तिवारी जी ने कह दी।

अब भोलानाथ मास्टर जी अचकचाए। फिर एकाएक हँसकर बोले, “अरे तिवारी जी, यह तो

चमत्कार कर दिया आपने। मुझे इसका पता ही नहीं था। सोचता था, थोड़े शैतान बच्चे हैं, शोर न करें, इसलिए डाँटना चाहिए। पर लगता है, कुछ गड़बड़ हो गई...!”

“शैतान...? अरे, ये तो छोटे-छोटे खरगोश हैं, खरगोश। कुक्कू खरगोश, मोहना खरगोश, माधव खरगोश, राधा खरगोशनी...! इनको तो आप बस हँसाते रहो। खेल-खेल में खुद ही सब कुछ सीख जाएँगे।”

सुनकर भोलानाथ मास्टर जी जोर से हँसने लगे। हँसते-हँसते बोले, “पर अब आप जैसी हँसी कहाँ से लाऊँ तिवारी जी?”

तिवारी मास्टर जी और भी जोर से हँसकर बोले, “बच्चों से प्यार करो, तो हँसी भी बच्चों जैसी बन जाती है। अरे भई, ये सारे बच्चे ही हँसी के गुब्बारे हैं।”

सुनकर तिवारी मास्टर जी के साथ-साथ भोलानाथ मास्टर जी, कुक्कू और क्लास के सब बच्चे हँसने लगे थे।

कुछ दिन पहले कुक्कू सोच रहा था, किसी तरह भोलानाथ मास्टर जी चले जाएँ। फिर से चश्मे वाले तिवारी मास्टर जी पढ़ाने लगें, तो मजा आ जाए। पर अब तो भोलानाथ भी तिवारी मास्टर जी बन गए थे। कुक्कू को अब सारे पाठ झटपट याद होने लगे थे।

545, सेक्टर-29

फरीदाबाद-121008 (हरियाणा)

The Nightmare

Mugdha Pandey

Every morning, Rajat used to go for a walk. Walking kept him healthy and refreshed his mind. It was his daily routine. Though, health was not the only reason for this motivated schedule. His friends would accompany him, so it was also the time when he would start the day surrounded by his friends. They were very dear to him.

Everyday, he would get up at 5 am in the morning. After having splashed some water on his face, he would get ready within 10 minutes and leave for the nearby park. On his way to the park, he

used to admire the trees lining the street. The rustling leaves, moving with the morning breeze, made his heart full of joy.

Rajat was quite a nature lover. He loved looking at the birds, chirping on the trees' barks while he would hum along sweetly. The agile squirrels, who would move so quickly had caught his fancy as they would embark on the tree right away, if Rajat approached them.

All this made him delighted and he looked forward to have such a lovely time in the lap of nature. And, thus he



would reach the park and would meet his friends and continue his walk for a quick half an hour so as to come back home in time to get ready for school. This was his daily routine. This was his dear grandpa's advice. He had instilled the healthy habit in Rajat, which he was proud of.

That day was no different. The clock rang five. Rajat, with same enthusiasm, got up from his bed. He went about his routine and geared up for the walk. The same fervour rang inside him to enjoy nature.

He climbed down the stairs of his house thinking about the palm trees, dancing gently to the tune of morning breeze on the street. By now, he had well reached the street.

As he moved ahead, he felt uneasy. He rubbed his eyes to make sure what he saw was real. But still he didn't believe it. The sight was quite gut-wrenching for Rajat. He grew as silent as the grave. His zeal soon gave way to disappointment. He, who loved the trees so much, had to walk without the trace of any of them.

"What has happened to all the trees? Where are they?" he thought. There was not a single tree to be found, where only yesterday he had enjoyed the morning chants of the birds on the Ashoka tree.

"What a gruesome act! He must be cruel who fell all the trees overnight," he remarked.

Reflecting profoundly on the happening of this morning, he still decided to go and meet his friends. He walked with only man-made buildings around him. There were no squirrels no birds and no greenery around him. The whole image was such as someone had forgotten to put trees in his sketch, the only thing visible was tall, high rise buildings against backdrop of the sky.

He reached the park. His friends, Rohan and Sonu were eagerly waiting for him. They both bore the same expression of shock. They had been themselves quite dumb struck. On seeing Rajat approaching towards them, they hurried to him. What they had witnessed was nothing short of a miracle, though not in the positive sense of the word.

"Do you see what has happened?" asked Rohan innocently. "That is quite visible, Rohan," replied Rajat trying not to be rude to his friend. "Where on earth are all the trees?" asked Sonu. "It was only yesterday when we had noticed that petite squirrel with a darker hue on that tree and look at it today, there is nothing to look at nothing to admire. Why has all this occurred suddenly?" he added.



Either of them was as clueless as the other. This sudden transformation had befuddled them all. "These high rise buildings have replaced all the trees," said Rajat. "But how can one be able to replace them all just in a day?" he pondered. "No trees means no oxygen, how are we going to survive? We don't have much time left," added Sonu in despair.

While the boys were brooding over the predicament, everyone else seemed to carry on his business as if nothing surprising had happened. They noticed that Sharma uncle, who was a regular visitor like them for daily morning

walk, was calmly going about his business.

"Any man with two eyes would be able to find trees missing, how has he not noticed?" asked Rajat. "Do you think he might be behind it?" enquired Sonu, though he was quite sure he must have done it.

Sonu did not like Sharma uncle. Once Sonu was pissing in the garden as he could not control the nature's call. He had been caught and reprimanded thoroughly by none other than Sharma uncle. Sonu himself had been aware of the wrong doing but it was the urgency that drove him use the corner of the

park, drawing the anger of Guardian of the Park, as Sonu would call him. This incident was deeply engraved on his mind and thus his dislike towards Sharma uncle.

Neither Rajat nor Rohan replied to Sonu's question. Instead, they thought of asking the Guardian of the Park about the possible reasons. Both of them approached Sharma uncle while Sonu followed them, though unwillingly.

"Excuse-us, uncle, do you have any idea what has happened this morning?" Rajat and Rohan asked in unison. "I hope it's not the third World War." remarked uncle. This was also why the boys loathed him. He could never answer any question directly. "Of course, it is, but between man and the nature," quipped Sonu. Both Rajat and Rohan were pleasantly surprised at Sonu's reasonable remark.

Taken aback by the crispness of the remark made by Sonu, Sharma uncle had no choice but to come straight to the point. He told them about how their parents and everyone else had just been contributing in the felling of trees.

"Many stomachs to feed, many heads to cover under the roof, many hands to work, thus for food, shelter and job, people have cut all the trees. They needed place to stay, they cleared all of

it. Same way, they cut trees to set up factories where they could employ others and feed their children with whatever they earned. How do you then expect to see the trees all your life? You have been, however, lucky that at least you have seen what trees are like. Think of those who would not be able to see the floral diversity that nature once offered. All that they would be looking at would be men and women with skyscrapers everywhere. They would not know the green colour forever."

Sharma uncle's monologue set the three kids' imagination rolling. They could never have thought of a world without trees! Rajat was so upset that he thought the word 'trees' was ringing thunderously in his mind. A few more clanging in his head and he opened his eyes just in time to see that it was the morning alarm bell that was ringing.

He got out of his bed to go to the balcony to find to his relief that the trees were intact at their places. The Ashoka tree stood tall as the previous day. He realized it was a nightmare, a dreadful one. Rajat, however knew, that this might come true one day if we did not make the right choices. He then got ready for his morning walk and looked forward to the animated discussion with his friends.

mugdha27@gmail.com

मिसरी रानी और मिट्ठू भइया

सुधीर मेहरा

मिसरी रानी और मिट्ठू भइया की यह एकदम सच्ची और अत्यंत खुशियों से भरी कहानी है। इस सच्ची कहानी के लिए हमें कुछ समय पहले को जाना पड़ता है। मालिनी कोई चार वर्ष पहले बाजार से 122 रुपये कीमत देकर एक तोता पिंजरा सहित लेकर घर आई थी और उसने उस तोते को अपना मित्र मान लिया और अपने नए मित्र को नाम दिया 'मिट्ठू भइया'।

मालिनी मिट्ठू भइया के खाने के लिए अमरूद, सेब, सलाद के पत्ते, हरी मिर्च और बाजरा लेकर आती और अति प्रेम से मिट्ठू भइया को देती। मिट्ठू भइया भी आनंद से खाते। मालिनी को हँसाने के लिए कभी-कभी वह पिंजरे के ऊपर चढ़कर, उलटकर नीचे आता और झूले पर चोंच के बल लटकता और कलाबाजी करता।

मालिनी की अच्छी देखभाल और अच्छे खाने से 'मिट्ठू भइया' अति सुंदर होने लगे। तीखी लाल चोंच, काली-काली गोल आँखें, काली गोल आँखों के चारों तरफ लाल गोल चक्कर, गले में अति सुंदर दो मालाएँ, हरी और सुनहरी लाल रंग उनके रूप को निखारने लगे। पंख भी हरे और हलके लाल रंग में खिलने लगे और नीचे से तीखी लंबी सुंदर हरे रंग की पूँछ और भूरे रंग के पंजे।

मिट्ठू भइया कुछ ही समय में बच्चों की तरह बोलने लगे, “मालिनी... मालिनी...!”

मालिनी जब दोपहर में स्कूल से पढ़कर आती तो मिट्ठू भइया 'मालिनी...मालिनी...मालिनी...' बोलकर उसे पुकारते और मालिनी भी घर पहुँचते ही उसे पुचकारती और पूँछ को सहलाती और मिट्ठू भइया अपनी चोंच से मालिनी के हाथ को प्यार से चूमते।

सरदी के दिनों में मालिनी अपने तोते मिट्ठू भइया का बहुत ध्यान रखती, पिंजरे के ऊपर अच्छी तरह चादर लगाती और पिंजरे के नीचे अखबार का मोटा कागज और उसे अपने कमरे में सुलाती। एक साल के बाद मालिनी के मन में आया, अब मिट्ठू भइया अति सुंदर हो गए हैं, भाषा भी बोलने लग गए हैं। अब उन्हें अपने आप में स्वतंत्र रहना चाहिए।





मालिनी का नाम लेकर फिर उड़ गए।

दोपहर के खाने के बाद जब मालिनी बरामदे में आती है तो हैरान और चकित होती है कि पिंजरे में मिट्ठू भइया और पिंजरे के

आँखों में स्नेह और प्रेम के आँसुओं से भरी मालिनी ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। मिट्ठू भइया खुले दरवाजे पर आते और फिर पिंजरे में आ जाते और मालिनी की तरफ देखते। कभी दोनों आँखों से, कभी एक तरफ से, कभी दूसरी तरफ से और फिर पिंजरे के दरवाजे पर आकर फर-फर करके उड़ जाते।

मालिनी का मन अति प्रसन्न हुआ कि उसने आज कुछ अच्छा काम किया।

स्कूल से मालिनी शाम को घर आई और अत्यंत हैरान हुई यह देखकर कि मिट्ठू भइया बोल रहे हैं और अपने पिंजरे में सेब और हरी मिर्च आनंद से खा रहे हैं।

दूसरा दिन रविवार का दिन था। मालिनी ने मिट्ठू भइया का पिंजरा बरामदे में फिर लटका दिया और दरवाजा खोल दिया। मिट्ठू भइया

ऊपर एक तोती बैठी है। मिट्ठू भइया ने थोड़े-से सलाद के पत्ते अपनी चोंच में भरकर पिंजरे से बाहर आकर उस तोती को बड़े प्रेम से खिलाए। मालिनी ने उस तोती का नाम 'मिसरी रानी' रख दिया।

अति प्यार से मिसरी रानी और मिट्ठू भइया ने मालिनी की ओर देखा और टर-टर, फर-फर करते हुए खुशी और हर्ष से उड़ गए और वापस नहीं आए।

अब मालिनी कॉलेज जाने लगी थी। एक दिन मौसम बड़ा अच्छा था। क्लास खत्म होने के बाद मालिनी कॉलेज के उद्यान में आकर घूमने लगी। हवा में सरदी की चुभन और बादल छाए हुए थे। पेड़ों के पत्ते हिलकर थपथपाकर मधुर आवाज करके गिर रहे थे।

मालिनी बेंच पर बैठकर अपनी पढ़ाई के बारे में सोच रही थी, बिल्कुल एकांत में।

मालिनी के कान में एक मधुर सीटी की आवाज आती है। न जाने क्यों, यह ध्वनि सुनकर उसके मन में उल्लास जाग गया। मालिनी जहाँ बैठी थी उसके सामने कॉटन ट्री (सिम्बल) के पेड़ की तरफ से सीटी की आवाज आ रही थी। मालिनी ने पेड़ की तरफ ध्यान से देखा, पत्तों में देखा, टहनियों में देखा, ऊपर देखा, पर कुछ दिखाई नहीं दिया, परंतु मन में खुशी की लहर चल रही थी।

मालिनी... मालिनी...

मालिनी... मालिनी...

मालिनी... मालिनी...

क्या देखा, क्या देखा मालिनी ने कि 'मिट्टू

भइया' बड़े प्यार से उसे देख रहे थे। कभी गरदन इधर घुमाकर और कभी उधर घुमाकर, कि 'मैं ही हूँ मिट्टू भइया।'

आज मिट्टू भइया बुला रहे, तीन साल के लंबे समय के बाद भी।

कॉटन ट्री 'सिम्बल' के पेड़ के तने के अंदर उन्होंने अपना आलीशान घर बनाया है जो दोनों तरफ से खुला है। एक बहुत ही सुंदर घर।

इतने में मिसरी रानी भी घोंसले से निकली। दोनों ने अति स्नेह से मालिनी को देखा। देखते-ही-देखते दोनों उड़कर निकल आए और मालिनी के ऊपर दो बार मँडराकर टर-टर करते हुए बहुत पास से उड़कर चले गए।

पिकनिक

डी-28, सेक्टर-30, नोएडा-201301

नटखट की खटपट

मीना गुप्ता

मिस्टर नटखट, दौड़े झटपट
पीछे दौड़ा, काला घोड़ा
हाथ नहीं था, उनके कोड़ा
पीछे घोड़ा, आगे नटखट
दौड़ रहे थे, सरपट-सरपट
मारी टक्कर, आया चक्कर

सड़क बीच में, गिरे कीच में
कैसा सिर पर आया संकट
दुनिया भर के ले लो झंझट
क्या हैं लफड़े, भाड़े कपड़े
उठकर झटपट, माँगे चटपट
मिस्टर नटखट, करते खटखट।

Puzzles for You

Srutikirti Nayak

Here are seven puzzles relating to mathematics with the help of which you can prove that you are smarter than your friend!

Q. 1 $\frac{3}{3} - \frac{3}{3} = 0$

Four threes have been arranged in such a way that the result is zero. You have to arrange these four threes with the help of any common arithmetical signs so that the result will be equal to 1 to 10 in turn.

Q. 2

1	2	3
4	5	6
7	8	9

Arrange these numbers in such a way that the second row will be twice of the first row and the third row will be the thrice of the first row. Repetition of numbers is not allowed.

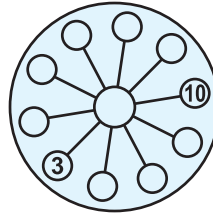
Q. 3 $29 - 1 = 30$

Can you prove that it is true?

Q. 4 Fill the grid with the help of the numbers 1 to 4 in such a way that no number is repeated horizontally, vertically or diagonally.

2			
		1	
			4
	3		

Q. 5 Fill the blank spaces of the wheel with the help of the numbers 1 to 11 in such a way that the addition of each straight line will be exactly 18. Repetition of numbers is not allowed.



Q. 6 Put the numbers from 1 to 10 in the blank space without repetition.

<input type="text"/>	<input type="text"/>
x	<input type="text"/>
<hr/>	
<input type="text"/>	<input type="text"/>
+	<input type="text"/>
<input type="text"/>	<input type="text"/>
<hr/>	
<input type="text"/>	<input type="text"/>

Q. 7 $1+2+3+4+5+6+7+8+9 = 45$

The row of figures shown here adds up to 45. You have to change one of the plus sign to a multiplication sign and add one set of parentheses to make this row of figures add up to 100.

ANSWERS

A.1. (i) $\frac{3}{3} + (3-3) = 1$

(ii) $\frac{3}{3} + \frac{3}{3} = 2$

(iii) $\sqrt[3]{3 \times 3 \times 3} = 3$

(iv) $\frac{3 + (3 \times 3)}{3} = 4$

(v) $3 + 3 - \left(\frac{3}{3}\right) = 5$

(vi) $3 + \left(\frac{3 \times 3}{3}\right) = 6$

(vii) $3 + 3 + \frac{3}{3} = 7$

(viii) $(3 \times 3) + \frac{3}{3} = 8$

(ix) $(3 \times 3) + (3-3) = 9$

(x) $(3 \times 3) + \frac{3}{3} = 10$

A2.

2	1	9
4	3	8
6	5	7

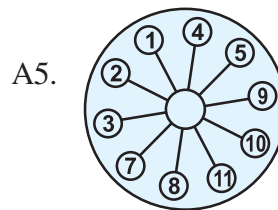
A3. $29 - 1 = 30$

$XXIX - I = XXX$



A4.

2	1	4	3
3	4	1	2
1	2	3	4
4	3	2	1



A6.

1	7
x	4
<hr/>	
6	8
+	
2	5
<hr/>	
9	3

A7. $1+2+3+4+5+6+7+(8 \times 9) = 100$

Teacher
Ravenshaw Collegiate School
Cuttack (Odisha)

हृदय परिवर्तन

डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

ग्रीष्मावकाश चल रहा था, इसलिए सभी स्कूल बंद थे। देहरादून नगर के किसी स्कूल में अंकुर और विभोर दोनों पढ़ते थे। आपस में पड़ोसी भी थे। उन दोनों में बड़ी गहरी दोस्ती थी। छुट्टियों का समय बड़े मजे से बीत रहा था। विज्ञान कथाएँ पढ़ने का दोनों को ही बड़ा शौक था। पत्र-पत्रिकाओं में छपी विज्ञान कथाएँ वे बड़े चाव से पढ़ते।

शाम को दोनों मित्र साइकिलों पर लंबी सैर को निकल पड़ते। मंसूरी को जाने वाली सड़क उन्हें विशेष प्रिय थी। उसी सड़क को नापने के लिए रोज शाम को अपनी साइकिलों पर निकल पड़ते।

एक दिन दोनों इसी तरह शाम को अपनी साइकिलों से जा रहे थे। अचानक विभोर को सड़क के बाएँ तरफ से झाड़ियों के पीछे जलती-बुझती रोशनी नजर आई। उसने सोचा यह उसका भ्रम होगा।

इसलिए इस बारे में अपने दोस्त अंकुर से उसने कोई जिक्र नहीं किया। लेकिन अगले रोज भी उसे झाड़ियों के पीछे उसी तरह जलती-बुझती रोशनी नजर आई। उस समय तो विभोर कुछ नहीं बोला, लेकिन घर लौटकर उसने अंकुर को वह रोशनी वाली बात बताई। सुनकर अंकुर बोला, “नहीं विभोर, तुम्हें जरूर भ्रम हुआ होगा। झाड़ी में कोई जुगनू वगैरह



होगा। तुम यह बात दिमाग से निकाल दो।” बात आई-गई हो गई। लेकिन विभोर के मन-मस्तिष्क में हलचल मची हुई थी। रह-रहकर उसका ध्यान उस जलती-बुझती रोशनी की तरफ चला जाता था। अगले रोज भी दोनों साइकिल से उसी रास्ते पर निकले। लेकिन आश्चर्य कि इस बार विभोर को कोई रोशनी नजर नहीं आई। उसने सोचा कि अंकुर की बात ही सही है। हो न हो, झाड़ी में कोई जुगनू वगैरह ही रहा होगा। यह सोचकर विभोर का मन एकदम शांत हो गया।

घर लौटे तो विभोर की माँ ने अंकुर को भी रोक लिया। बड़े प्यार से बनाई खीर उन्होंने दोनों को परोसी। खीर खाकर खुशी-खुशी अंकुर अपने घर लौटा और विभोर भी अपने अन्य कामों में व्यस्त हो गया। रोशनी वाली बात उसके दिमाग से एकदम निकल गई थी।

अपने ‘स्टडी रूम’ में पहुँचकर विभोर ‘विज्ञान आलोक’ के नए अंक को पढ़ने लगा। पत्रिका के पन्ने पलटते-पलटते उसकी निगाह ‘रोशनी का रहस्य’ शीर्षक विज्ञान कथा पर ठहर गई। वह शुरू से आखिर तक इस कहानी को पढ़ गया। संक्षेप में कहानी इस प्रकार थी—आभास नाम का एक लड़का, जो किसी पहाड़ी प्रदेश में रहता था, रोज शाम को टहलने के लिए निकल जाता।

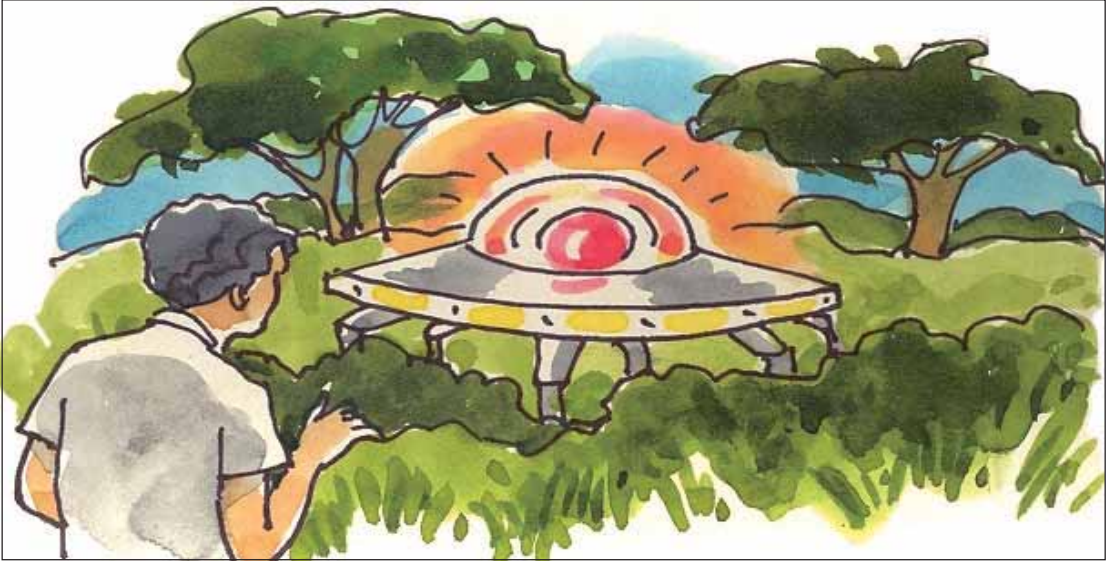
अचानक एक दिन उसे झाड़ी के पीछे जलती-बुझती रोशनी नजर आई। वह इसे टालकर

आगे बढ़ गया। लेकिन अगले रोज तथा उससे अगले रोज भी उसे उसी तरह जलती-बुझती रोशनी नजर आई। अपनी उत्सुकता न रोक पाने के कारण वह झाड़ी के अंदर घुस गया तो उसे षट्भुजाकार अजीब-सा यान नजर आया, जिसकी छोटी-छोटी खिड़कियों से रोशनी निकल रही थी। यान के अंदर एक लाल रंग की गेंद भी घूमती नजर आ रही थी। उसी के कारण रोशनी जल-बुझ रही थी।

इससे पहले कि आभास खुद को सँभाल पाता यान से एक सफेद रंग का धुआँ निकलने लगा, और फिर आभास को कुछ याद नहीं रहा। दस दिनों के बाद वह अपने घर लौटा। अपने घरवालों को उसने यह घटना कह सुनाई कि किस तरह दूसरी सभ्यता के प्राणियों ने उसका अपहरण कर लिया था। आभास के दस दिन उन विचित्र प्राणियों के बीच में कैसे व्यतीत हुए इस बारे में कहानी में बताया गया था।

कहानी पढ़कर विभोर आश्चर्यलोक में खो गया। उसे एक अद्भुत रोमांच की अनुभूति हुई। झाड़ियों में जलती-बुझती रोशनी की बात जिसे वह भुला बैठा था, उसे दोबारा याद आ गई।

अगले रोज शाम को विभोर को अकेले ही जाना पड़ा। अंकुर अचानक बीमार पड़ गया था। धीरे-धीरे साइकिल चलाता हुआ विभोर रोजाना वाली सड़क पर ही जा रहा था। उसकी चौकन्नी निगाहें बाएँ तरफ की झाड़ियों पर ही



थीं। अचानक उसे झाड़ियों में जलती-बुझती रोशनी नजर आई। वह अपनी साइकिल को आगे निकालकर ले गया। कुछ सोचकर वह घर की तरफ लौट चला। लेकिन फिर जानबूझकर वह दोबारा उन्हीं झाड़ियों के पास से निकला। इस बार फिर से जलती-बुझती रोशनी उसे नजर आई।

विभोर अपनी उत्सुकता को दबा नहीं पाया। साइकिल एक तरफ खड़ी करके वह झाड़ियों के अंदर जा घुसा। शाम को धुँधलका छाने लगा था। रोशनी धीरे-धीरे कम होने लगी थी।

आगे बढ़ते-बढ़ते विभोर की नजर अचानक एक चमकती हुई धातुई चीज पर पड़ी। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ सोच पाता उसके नथुनों में एक तेज महक जा घुसी और वह बेहोशी में जा डूबा। आँख खुली तो विभोर ने अपने आपको एक अजीब-से बिस्तर पर लेटे

पाया। किसी चमकती धातु का बना वह बिस्तर बड़ी अजीबोगरीब शक्ल का था। उसकी निगाह छत पर गई। अष्टभुजाकार छत भी चमकती धातु की बनी हुई थी। दीवारें भी धातुओं की ही थीं, लेकिन फर्श किसी दूसरे पदार्थ का बना था। बिस्तर पर लेटे-लेटे विभोर अचरज भरी निगाहों से यह सब देख ही रहा था कि अचानक एक आवाज ने उनका ध्यान भंग किया, “क्यों उठ गए? तुम्हें कोई तकलीफ तो नहीं हुई?” विभोर ने अपनी आँखें घुमाकर देखा। लेकिन कमरे में उसे कोई भी नजर नहीं आया। दोबारा से वही आवाज आई, “चौको नहीं। हमारे ग्रह अर्जेंम्पी में तुम्हारा स्वागत है। हम तुम्हारे शत्रु नहीं मित्र हैं।”

(दो अंकों में समाप्त। शेष अगले अंक में)

43, देशबंधु सोसायटी

15, आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

The Miracle of A Coin

Sarla Bhatia

Faiyzee was a water-carrier in Kashi. During summer time he distributed water among passers-by. A few kind people tipped him dimes at times. Others walked away after satisfying their thirst. However, he was always gung-ho, and sang tuneless boring songs to keep away woes and worries.

One afternoon it rained heavily and there was slush on the road. Misra Ji, the miser, slipped and his belongings were scattered on the path. A little later, Faiyzee happened to pass that way and he found a coin stuck in the mud.

It was a Rupee! The find was a fortune for him, to be kept safe and secured for the future. No place could be better than the wall of the royal palace, he thought.

Fortunately, that afternoon, the guards were making merry in the cool breeze. Faiyzee spotted a loose brick in the wall. Placing the coin in one corner, he fixed the brick with mud, to make the wall look as old as centuries. He noted that the brick was twenty paces from the check post which faced a temple.

The coin brought him pots of luck. He got a gardner's job at a rich mansion. He saved good money and in due course

married Jhunjhun, a maid working in that very house. Two salaries, a good hut to live in and a beautiful wife gave Faiyzee immense satisfaction.

In a flush of happiness he confided in his wife about the buried coin. The couple decided to splurge at the Teej festival, a popular event in the rainy season. Faiyzee was determined to give his bride a time of her life.

A day before the big event, Faiyzee walked out in spite of pouring rain. As he was removing the brick, a guard





our wall for a rupee," said the king. "Sire, with your prize I shall have 11 rupees. The money will enable me to present a silver necklace to my wife," replied Faizee. A clever fellow, everyone thought!

The king decided to find out the young adventurer's motives.

caught him and shouted, "Hey, what are you upto?" The guard dragged him to the Court, saying he suspected Faiyzee of trespassing inside the palace, with an intention to remove valuables. The king thought, "A thief would have preferred darkness, instead of broad daylight. Moreover, what makes this man face such a bad weather?" He wanted to know the truth.

"What was your mission, young man?" asked the king.

"My Lord, I was trying to recover the coin which I had buried in the palace-wall. I wanted to give a present to my wife at the Teej," answered Faiyzee. The courtiers laughed loudly, "What a yarn?" But the king was not surprised, because of his simplicity and guileless answer.

"I will give you 10 rupees to have a good time with your wife. Don't spoil

He raised the stake to 50 rupees, then to 100 rupees and finally to 1000 rupees.

The young man bowed, thanked his highness and remarked, "I have 51, 101 and 1001 rupees, as the prize money was raised. Firstly garments, then a coach and finally a house came on his list of gifts to his wife. In a desperate move the king asked. "How much money will make you forget that wretched one rupee?"

"Sir, I cannot forget that rupee. It has brought me 1000 rupees. That coin may be too 'little' compared to your awards but it does not lose its value, albeit has added to my fortune."

The king got his answer. Wise men say, "Take care of your 'Pennies', the 'Pounds' will take care of themselves."

*C-13, Soami Nagar (South)
New Delhi-110017*

हरा पेड़

डॉ. शशि गोयल

सोनू के घर के सामने कच्चा आँगन था जिसे उसकी माँ गोबर से लीप देती थी। एक दिन उसके कोने में एक नन्हा-सा पौधा उगा। दो नन्ही-नन्ही पत्तियों को देखकर सोनू बहुत खुश हुआ। वह प्रतिदिन उसे बढ़ते हुए देखता। जरा-सा बड़ा होते ही उसने उसके चारों ओर बाड़ा-सा बना दिया। वह उसमें पानी देने लगा। उसे मालूम नहीं था कि वह किस चीज का पेड़ है। पत्तियाँ उभर आई थीं और पंखे का-सा आकार ले रही थीं। माँ ने बताया, लगता है कि पपीते का पेड़ है। अब तो स्कूल जाने से पहले और आने के बाद सबसे पहले पपीते के पेड़ को देखना सोनू का काम बन गया।

सोनू के दोस्त अचल के घर के पिछवाड़े कच्चा स्थान पड़ा था जहाँ घर का कबाड़ा डाला जाता था। सोनू के घर पर पपीते का पेड़ उगा है, यह सुनकर अचल सोनू के घर आया।

छह महीने में पेड़ करीब तीन हाथ लंबा हो गया था। अचल का मन भी उत्साह से भर उठा। उसके घर की कच्ची जमीन तो सोनू के आँगन से चौगुनी है, दो-दो गज की दूरी पर यदि पेड़ लगाए जाएँ तो करीब चौबीस पपीते के पेड़ लग जाएँगे। सवा-डेढ़ साल में पपीते का पेड़ फल दे देता है। एक पेड़ पर आठ पपीते भी लगे तो पपीतों का ढेर लग जाएगा।

सारी रात उसे स्वप्न में भी फलों से लदे पेड़ नजर आए। सुबह उठते ही वह कच्ची जगह को देखने गया। हाँ, चौबीस पेड़ तो लग ही जाएँगे, लेकिन कूड़ा-कबाड़ तो बहुत पड़ा है, यह कैसे उठेगा, कौन उठाएगा। खाली जगह तो मुश्किल से चार पेड़ लायक है। कुछ देर वह देखता रहा, फिर स्कूल का काम करने बैठ गया, क्योंकि पहला दिन बेकार हो गया था। बगीचा बनाने का काम कल से शुरू करेगा।

दूसरे दिन स्कूल जाना था, स्कूल से आकर शाम को फिर लोहा-लंगड़ देखा, एक-दो उठाकर





नहीं है। यहाँ गुलाब का पौधा लगाएगा या बेला का? उसने अचल से कहा कि अभी पपीते के बीज बो दे, फिर उसमें से निकले स्वस्थ पौधे लगा देना।

“अरे! नहीं,” अचल ने लापरवाही से कहा, “पहले जमीन साफ कर लूँ, फिर नर्सरी से अच्छे

एक तरफ रखे, फिर खेल की ओर चल दिया, बाकी काम कल करेगा। दो-तीन दिन थोड़ा-थोड़ा काम करने पर उसका उत्साह ठंडा पड़ गया।

स्कूल की पढ़ाई करनी है। गरमी की छुट्टियों में यह काम करेगा। बरसात भी तो बाद में ही आएगी, पेड़ भी तो तभी लगेंगे। बस, कभी-कभी सोनू से फूल निकलने की बात सुनता तो जमीन देख आता। उसके पेड़ पर पीले सफेद मकरंद से भरे हुए फूल आने लगे थे। साथ ही उसने कुछ दूरी पर नींबू का पेड़ भी लगा दिया था।

सोनू अचल की योजना से बहुत प्रसन्न था। वह अचल के घर पर लगे कई पेड़ों की कल्पना मात्र से रोमांचित हो उठा था। काश! उसके पास भी ज्यादा जमीन होती। बस, एक छोटा-सा पौधा और लग सकता है, जगह ही

पौधे लाकर लगा दूँगा।”

“तो इसकी सफाई कब करेगा?” सोनू का जोश कम नहीं हुआ था।

“कबाड़वाला आएगा, तब कुछ उसे बेच दूँगा।”

कबाड़वाला आया, पर कुछ ही सामान जा पाया। चार महीने बाद सोनू दो सुनहरे पीले रंग के पपीते लेकर आया और अचल को दिए। एक दम मीठे, जैसे दशहरी आम। अचल उदास हो उठा आज, कल, आज में डेढ़ साल बीत गया। दो-तीन पेड़ तो अब तक फल भी देने लगते। उसी दिन अचल ने नर्सरी से लाकर दो पौधे रोप दिए।

चिदंबर, 3/28 ए/2, जवाहर नगर रोड
खंदारी, आगरा-282002 (उ. प्र.)

पर्यावरण

सुमित्रा सिंकु

एक लड़की थी जिसका नाम कोयल था। वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ती थी। उसकी एक सहेली थी जिसका नाम अनु था। अनु बहुत बीमार हो गई थी। और बहुत सारे बच्चे बीमार होने के कारण स्कूल नहीं आ पा रहे थे। कोयल अपनी माँ से बातें कर रही है :

कोयल : हम इतना बीमार क्यों हो जाते हैं?

माँ : पर्यावरण गंदा होने के कारण।

कोयल : पर्यावरण कौन गंदा करता है और कैसे?

माँ : पर्यावरण को इनसान ही गंदा करते हैं। पेड़ काटकर, प्लास्टिक, कागज आदि जलाकर समुद्र, तालाब आदि को गंदा कर देते हैं। इस कारण से बहुत-सी बीमारियाँ होती हैं। हवा गंदी हो जाती है। इस कारण से हम अच्छी हवा में साँस नहीं ले पाते हैं। अभी बहुत सारी मशीनों के कारण भी पर्यावरण गंदा हो रहा है। किसी को चोट लग जाती है तो कोई मशीनों के कारण मर जाता है।

कोयल : पर्यावरण को किस प्रकार साफ कर सकते हैं?

माँ : अगर हम कागज, काँच आदि के बेकार



टुकड़ों को रद्दी वाले को दे देते हैं तो वह उन्हें रिसाइक्लिंग करने के लिए भेज देते हैं। ऐसा करने से पेड़ ज्यादा नहीं कटेंगे। हमें पत्ते भी नहीं जलाने चाहिए। उससे वायु प्रदूषण होता है। हमें उन पत्तों को अपने बगीचे में गलाकर, खाद बनाकर उन्हें पेड़ों की जड़ों में डालना चाहिए। ऐसा करने से पेड़ों को ताकत मिलेगी।

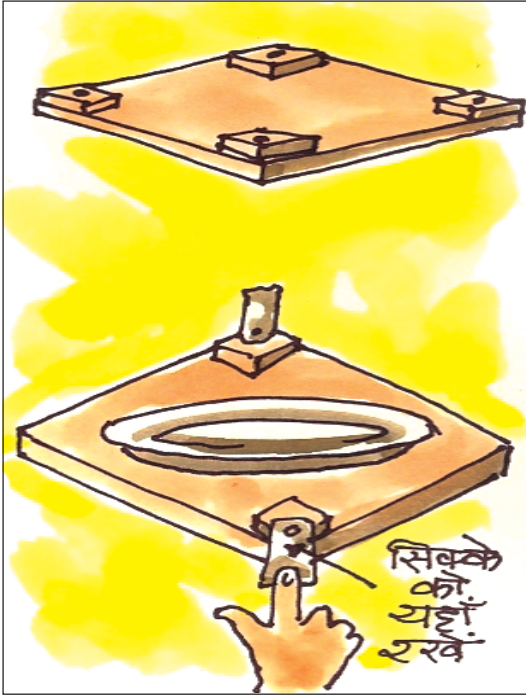
कोयल : (खुशी से) माँ, मैं ये बातें अपने मास्टर साहब और अपने साथियों को बताऊँगी।

(अगले दिन कोयल स्कूल जाकर अपने अध्यापक से ये सारी बातें बता देती है।)

केंद्रीय विद्यालय, मेघाटुबुरु
(ओड़िशा)

मजेदार खेल—उछलते सिक्कों का

आइवर यूशिएल



ये चीजें जमा करो :

25 सेमी. X 25 सेमी. आकार का प्लाईवुड का टुकड़ा, 5 या 10 के सिक्के, लोहे की पतली पट्टी के चार टुकड़े, लकड़ी के चार गुटके, कीलें, हथौड़ी, रंग-ब्रुश, रेगमाल, एक तश्तरी।

बनाना शुरू करो :

प्लाईवुड के टुकड़े को रंग लो या इस पर कोई रंगीन कागज लेई अथवा फेवीकोल की मदद से चिपका दो। लकड़ी के गुटकों व लोहे की

पत्तियों को अच्छी तरह रेगमाल से रगड़कर साफ कर लो और हो सके तो इन्हें भी रंग डालो।

अब चित्र के अनुसार गुटकों को प्लाई के चारों कोनों पर एक-एक कील की मदद से जड़ दो। इसके बाद लोहे की पत्तियों को भी कीलों से इन गुटकों के साथ जोड़ो। सामान की पेटियों के ऊपर जो लोहे की पत्तियाँ कसी जाती हैं, उनके टुकड़ों का उपयोग सबसे आसान रहेगा तुम्हारे लिए।

तश्तरी को प्लाई के ठीक बीचों-बीच रखो और 5 या 10 के सिक्कों को लोहे वाली पत्तियों के ऊपर रखकर पत्ती को एक अँगुली से आहिस्ता से दबाकर छोड़ दो। जानते हो क्या होगा? पत्ती अँगुली का दबाव हटते ही पुनः अपने स्थान पर आने की कोशिश के साथ अपने ऊपर रखे सिक्के को उछालेगी और यही तुम चाहते भी हो। है न? बस, अब देखना यह है कि तुम या तुम्हारे मित्रों में से कौन अधिक-से-अधिक सिक्कों को उछालकर सीधे तश्तरी में डाल पाता है। सबसे अधिक सिक्के तश्तरी में पहुँचाने वाला ही विजयी होगा, यह ध्यान रखना।

सी-203, कृष्णा काउंटी
रामपुर नैनीताल, मिनी बाईपास
बरेली-243122 (उ.प्र.)

Book Review

Boond

This story is about water and its importance. It tells us how due to our carelessness all water bodies are being polluted and unless we wake up to reality nothing will change. Boond means droplets of water.

Ramendra Kumar is an award winning Indian writer for children with twenty-four books in English and translations in seven foreign and eight Indian languages.

Ajanta Guhathakurta has illustrated a number of children's books.



Boond

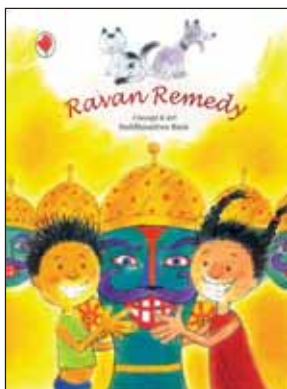
Ramendra Kumar

Illustrated by *Ajanta Guhathakurta*

National Book Trust, India

₹ 45.00

24pp



Ravan Remedy

Siddhasattwa Basu

National Book Trust, India

₹ 50.00

24pp

Ravan Remedy

An interesting tale about the character Ravan from the epic Ramayana. Ravan, whose effigy is burnt during the Dussehra festival is a symbolic burning to ashes of all that is evil, is given a humourous albeit ironical twist.

Siddhasattwa Basu is an illustrator, painter and maker of animation films for television. He has won the Katha Chitrakala Award in the year 2002

Help
Teddy
find his
way home

